P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कुषाणों के शासनकाल में आयात तथा निर्यात में बन्दरगाहों का महत्व

Importance of Ports in Import and Export during The Reign of Kushanas

Paper Submission: 03/06/2021, Date of Acceptance: 16/06/2021, Date of Publication: 24/06/2021

विवेक कुमार
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
आई0ओ0पी0, वृन्दावन, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

लक्ष्मी गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
आई0ओ0पी0, वृन्दावन, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

कुषाणों के शासनकाल में विदेशी व्यापार की उन्नति का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। भारत पूर्व तथा पश्चिम के देशों में व्यापार का प्रमुख केन्द्र बनकर उभरा। कुषाणों के समय में नए–नए व्यापारिक मार्गों की खोज की गई। व्यापारिक केन्द्रों एवं बंदरगाहों के विकास के फलस्वरूप व्यापारियों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर वस्तुओं को लेकर आना जाना सुलभ हो गया। भारत के समुद्र तट पर अनेक समृद्ध बन्दरगाहों का विकास किया गया जिनमें 'मुजरिम' मालवार के तट पर स्थित एक प्रमुख बन्दरगाह था। यहां रोमन व्यापारियों की बस्ती थी। इसके अतिरिक्त मदुरा, भृगुकच्छ, सोपारा, भृगुकच्छ, पुहार, कलिआना, कावेरी पट्टनम्, पोडुके सोपात्मा तथा ताम्रलिप्ति अन्य प्रमुख बन्दरगाह थे। भारतीय व्यापारी अरब सागर, हिन्दू सागर, फारस की खाड़ी, लाल सागर, बंगाल की खाड़ी का उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए करते थे। भारत का विदेशी व्यापार दक्षिण पूर्व स्थिति देशों वर्मा, सुमात्रा, मलाया, जावा से भी होता था।

इसके लिए भारतीय व्यापारी तीन समुद्री मार्गों का प्रयोग करते थे। प्रथम ताम्रलिप्ति जहां से अंडमान द्वीप होते हुए मलाया प्रायद्वीप द्वितीय मार्ग कलिंग के दन्तपुर व आन्ध्र के कावेरीपट्टनम् जैसे बन्दरगाहों से बंगाल की खाड़ी को पार करके तृतीय मार्ग लंका (सिंहल द्वीप) से आगे मलाया तक जाता था।

A new chapter in the development of foreign trade began during the reign of the Kushanas. India emerged as a major center of trade in the countries of the East and the West. New trade routes were discovered during the time of Kushanas. With the development of trading centers and ports, it became easier for traders to move goods from one place to another. Many prosperous ports were developed on the coast of India, in which 'Mujrim' was a major port situated on the banks of Malwar. There was a settlement of Roman merchants. Apart from this Madura, Bhrigukachha, Sopara, Bhrigukachha, Puhar, Kaliana, Kaveri Pattanam, Poduke Sopatma and Tamralipti were the other major ports. Indian merchants used Arabian Sea, Hindu Sea, Persian Gulf, Red Sea, Bay of Bengal for international trade. India's foreign trade was also done from the countries of the southeast, Verma, Sumatra, Malaya, Java.

For this Indian merchants used three sea routes. The first Tamralipti from where the Malaya peninsula via the Andaman Islands, the second route crossed the Bay of Bengal from the ports like Dantapur in Kalinga and Kaveripatnam in Andhra, the third route went from Lanka (Sinhala Island) to Malaya.

मुख्य शब्द : व्यापारिक जल मार्ग, बन्दरगाह, मुजिरिस, ताम्रलिप्ति, रोम, सुवर्ण भूमि, मलाया, हाथी दांत, गैंडा, पक्षी, पशु, रेशम, मलमल, मसाले, जड़ी–बूटी, खनिज पदार्थ

Trade Waterways, Harbours, Muziris, Copperplates, Rome, Golden Land, Malaya, Ivory, Rhinoceros, Birds, Animals, Silk, Muslin, Spices, Herbs, Minerals

प्रस्तावना

प्राचीन काल में अन्य देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे। व्यापार के लिए समुद्री मार्ग का भी प्रयोग किया जाता था। कुषाणों के शासन में

भारत का विदेशी व्यापार काफी उन्नत हुआ था। समुद्री यात्रा की नई खोजों व जहाजरानी का विकास भी किया जाने लगा।

शोध कार्य का उद्देश्य

1. कुषाणों के शासन में विदेशी व्यापार के विकास का अध्ययन करना।
2. कुषाण काल में भारतीय समुद्र तट पर स्थिति बन्दरगाहों के महत्व का अध्ययन करना।
3. भारत तथा विदेशों से आयात–निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का अध्ययन करना।
4. भारत तथा विदेशों के मध्य व्यापार सन्तुलन का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

1. मोतीचन्द्रा, 1953, सार्थवाह (प्राचीन भारत की पथ पद्धति) बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद, पटना। इस पुस्तक में प्राचीन भारत विशेष रूप से मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक विभिन्न व्यापारिक थल तथा समुद्री मार्गों तथा बन्दरगाहों का वर्णन किया गया है। कुषाणों के शासन में विभिन्न भारतीय नगरों में व्यापारिक वस्तुओं के आयात–निर्यात पर भी प्रकाश डाला गया है।
2. मैटी, एस0के0, 1970, इकोनोमिक लाइफ इन एनशियंट इण्डिया, दिल्ली, 1970। इस पुस्तक में प्राचीन भारत में आर्थिक जीवन वाणिज्य तथा व्यापार की गतिविधियों पर लेखन कार्य किया गया है। शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक जीवन की तुलना भी की गई है।
3. बुच, एम0, 1990, इकोनोमिक लाइफ इन एनशियट इण्डिया, भाग 2। प्राचीन भारत में आर्यों से लेकर हर्षवर्धन तक के कालखण्ड में आर्थिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है।
4. पुरी, बी0एन0, 1965, इंडिया अंडर दि कुशानाज, भारतीय विद्या भवन, बम्बई। भारत में कुषाण वंश की स्थापना, कुषाणों की राजनीतिक उपलब्धियाँ प्रशासन, साामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर एक प्रामाणिक एवं विस्तृत अध्ययन किया है। कुषाणों के शासनकाल में विदेशों से व्यापार विशेष रूप से रोम, तथा द0पू0 के देशों जावा, सुमात्रा, तथा सुवर्णभूमि (वर्मा) से समुद्री मार्ग से व्यापार की जानकारी प्राप्त होती है।
5. मोतीचन्द्रा, 2015, ट्रेड एंड ट्रेड रूट्स इन एनशियंट इंडिया, अभिनव प्रकाश, नई दिल्ली। मोतीचन्द्रा ने प्राचीन भारत के थल तथा जल व्यापारिक मार्गों नगरों तथा बन्दरगाहों पर विस्तृत लेखन कार्य किया है। व्यापारिक संगठनों तथा आयात–निर्यात की वस्तुओं की विस्तृत सूची भी दी गई है।
6. प्रसाद, प्रकाश चरन, 2018, फारेन ट्रेड एंड कामर्स इन एनशियंट इण्डिया, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली। इस पुस्तक में मौर्य काल से लेकर गुप्तकाल के मध्य वाणिज्य तथा व्यापार के विविध पक्षों पर लेखन किया गया है। साथ ही मौर्य, कुषाण, गुप्तों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया हैं।

कुषाणों के शासन में भारत में अनेक अच्छे बंदरगाह थे। इनमें भड़ौच, कल्याण, सुपारा, कावेरीपट्टनम, ताम्रलिप्ति तथा मुजिरिस पोताश्रय प्रमुख थे। साथ–साथ कोरोमण्डल तट तथा पूर्वी समुद्र तट पर चंपा तथा ताम्रलिप्ति के बंदरगाहों से आयात–निर्यात किया जाता था। तमिल ग्रंथ शिल्पदिकारम में पुहार (कावेरीपट्टनम्) तथा मुजरिम बंदरगाहों का वर्णन किया गया है। पुहार पोताश्रय में सदैव बड़ी संख्या में जहाज रहते थे। दक्षिण भारत के मुजिरिस नगर में यवनों के सुन्दर जहाज सोने से लदे हुए यहां आते थे और भारतीय मसाले लेकर अपने देश को लौटते थे। भारतीय व्यापारी अरब सागर, हिन्दू सागर, फारस की खाड़ी, लाल सागर, भूमध्य सागर तथा बंगाल की खाड़ी का उपयोग करते हुए विभिन्न देशों से व्यापार करते थे। कुषाणों के समय में भारत में बर्बरिकम नामक एक प्रसिद्ध बंदरगाह पश्चिमी समुद्री तट स्थित था।

कुषाणों के शासन में दक्षिण–पूर्व के देशों से समुद्री मार्ग से व्यापार होता था। वर्मा, मलाया, जावा, सुमात्रा के समूह को सुवर्ण भूमि अथवा सुवर्ण द्वीप के रूप में जाना जाता था। पूर्वी तट पर स्थित ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से श्रीलंका को एक सीधा समुद्री मार्ग होता था। इस स्थान से ही सुवर्णभूमि और यवन द्वीप तक समुद्री यात्रा होती थी। सुवर्ण भूमि जाने से पहले पोत अलोसिज नामक स्थान के उत्तर में एकत्रित होते थे। वहां के सुवर्ण भूमि की समुद्री यात्रा होती थी। कुषाण काल में द0पू0 के देशों में तीन समुद्र मार्गों से व्यापार होता था। प्रथम मार्ग ताम्रलिप्ति से अण्डमान द्वीप होते हुए मलाया प्रायद्वीप, द्वितीय मार्ग कलिंग के दन्तपुर व आंध्र के कावेरीपट्टनम् के बंदरगाहों से सीधा बंगाल की खाड़ी को पार करके मलाया प्रायःद्वीप तक जाता था। तीसरा मार्ग लंका (सिंहल द्वीप) होते हुए मलाया तक जाता था।

भारत की लौंग (लबंग) का भी निर्यात बड़े स्तर पर किया जाता था। प्लिनी के अनुसार ऊँट के चमड़े से बने थैलों में लौंग भारत से रोम भेजी जाती थी। गुग्गुल का निर्यात बारबैरिकम और भड़ौच से था। बलख से सबसे अच्छा गुग्गुल आता था। इसका उपयोग धार्मिक कार्यों व शराब को सुगन्धित बनाने में किया जाता था। नील का निर्यात बारबैरिकम से किया जाता था। इसके अतिरिक्त एक पीला रंग होता था जिसे ऊँट और गैंडों के चमड़ों के बने थैलों में भरकर बारबैरिकम और भरूकच्छ बन्दरगाहों से निर्यात किया जाता था। विदेशों में इसे रंग और औषधि के लिए उपयोग किया जाता था। तिली का तेल तथा शक्कर पूर्वी अफ्रीका के बन्दरगाहों को भेजी जाती थी। उस समय रोम में भारतीय शक्कर की बहुत मांग थी।

भारतीय वस्त्रों में सूती एवं ऊनी कपड़ों, शाल–दुशालों तथा मलमल के कपड़ों को विदेशों में निर्यात किया जाता था। उज्जैन, तगर, बेरीगाजा, बारबैरिकम तथा पैठन वस्त्रों की मंडी होती थी। भारतीय मलमल रोमन साम्राज्य तक भेजी जाती थी।

कुषाणों के शासन में पश्चिमी देशों में भारत के बहुमूल्य रत्नों की बहुत मांग थी। मोती, हीरे, पन्ने, स्फटिक, मूंगे, वैदर्य, नीलम, अकीक, गोमेद, सूलेमानी

पत्थर, सूर्यकान्त तथा तामड़ा पत्थर का निर्यात किया जाता था। निर्यात के लिए मुजिरिम तथा नेलकिंडा बंदरगाह प्रमुख थे। रोमन साम्राज्य को अकीक, नीलम मुजिरम तथा नेलकिंडा इन बन्दरगाहों से निर्यात होता था।

भारत से पश्चिमी देशों को कृषि तथा अन्य पदार्थों में जैसे फल–फूल व अनाज का निर्यात भी होता था। केले, बेर, नींबू, संतरे, आड़ू, चकोतरा, खीरा, ककड़ी, नारियल तथा प्याज, चुकंदर तथा बैंगन, गुलाब तथा कमल के फूल भी निर्यात किये जाते थे। रोम के लिए ईख भी निर्यात होती थी। भारत से कपास भी निर्यात होती थी। भड़ौच के बन्दरगाह से इन्हें निर्यात किया जाता था। गेहूं, चावल तथा बाजरा अनाजों को विशेष समुद्री मार्गों से निर्यात किया जाता था। समुद्री मार्ग से भारत से निर्यात होने वाले वस्तुओं में मुजिरिम, सालावार, नेलकिंडा, टिण्डिस से रोम को काली मिर्च, तेजपत्ता, औषधियाँ, शक्कर थीं। साथ ही इसी बन्दरगाह से रोम को मलमल भी निर्यात की जाती थी।

इस कालखण्ड में भारत में आयात होने वाली सबसे महत्वपूर्ण वस्तु बहुमूल्य धातु के सिक्के थे। रोम से सोना स्वर्ण सिक्कों के रूप में भारत आता था। जहाजों में सोना भरकर लाया जाता था और विनियम में काली मिर्च भारत से ले पाई जाती थी। बेरिगाजा तथा मालाबार के बन्दरगाहों पर भारतीय वस्तुओं का मूल्य, सोने और चांदी के रोमन सिक्के में होता था। तांबा, षीषा, रांगा, मूंगा, गंधक भारत में आयात होता था। तांबा रोम व अरब से आता था। मूंगा भूमध्यसागर से बारबैरिकम, भरूकच्छ, नेलकिंडा और मुजिरिम के बन्दरगाहों पर आता था।

कुषाणों के समय में भारत में उम्मन से बड़ी मात्रा में खजूर भड़ौच के बन्दरगाह पर लाया जाता था। मिस्र से शिलाजीत का आयात किया जाता था। इसका उपयोग आयुर्वेद में औशधि निर्माण के लिए किया जाता था। सुरमे का आयात, भड़ौच, मुजिरिस व नेलकिंडा बंदरगाहों पर होता था। अरब से लोबान गोंद भी आयात की जाती थी। सोना हिंदेशिया, उम्मान, अपोलोगस से, तांबा रोम, ब्लूचिस्तान, अरब से, आभूषण रोम से, हाथीदांत द0पू0 एशिया से, मसाले द0पू0 एशिया से, घोड़े अरब, मिस्र, ईरान, सिंध से आयात किये जाते थे।

निष्कर्ष:–

कुषाणों के शासन काल में भारत का अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री मार्ग से व्यापार काफी विकसित हो चुका था। विदेशी व्यापारी समुद्री मार्ग से वस्तुएं भारत के बन्दरगाहों पर भेजते थे। भारत से भी रोम, मिस्र, सीरिया, ईरान को वस्तुओं, पशु–पक्षियों, वस्त्र, मलमल तथा मसालों का निर्यात समुद्री मार्ग से किया जाता था।

उस समय में भारत का समुद्री व्यापार का सन्तुलन आर्थिक रूप से भारत के पक्ष में था। भारत में प्रशासनिक स्तर पर स्थापित वाणिज्य समूहों तथा राज्य प्रशासन द्वारा निरन्तर सहयोग तथा प्रोत्साहन मिलता रहा। कुषाणों की राजनीतिक स्थिरता के फलस्वरूप भारत की वस्तुओं की मांग चीन, द0पू0, मध्य एशिया, पश्चिमी एषिया तथा यूरोप तक थी। अनेक बन्दरगाहों से भारत में आयात तथा निर्यात की गतिविधियाँ काफी व्यवस्थित थीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. बोस, अतीन्द्रनाथ, साोशल एंड रूरल इकोनॉमी ऑफ नार्दन इंडिया, 1945, कलकत्ता
2. पुरी, बी0एन0, इंडिया अंडर दि कुशानाज, 1965, बम्बई
3. विद्यालंकार, सत्यकेतु, प्राचीन भारत का इतिहास, प्रारम्भ से बारहवीं सदी के अन्त तक, 1953, मंसूरी
4. प्रसाद, प्रकाश चरन, फारेन ट्रेड एंड कामर्स इन एनशिंयट इंडिया, 2015, नई दिल्ली।
5. मोतीचन्द्रा, ट्रेड एंड ट्रेड रूट्स इन एनशिंयट इण्डिया, 2011, नई दिल्ली।
6. मोतीचन्द्रा, सार्थवाह, प्राचीन भारत की पथ पद्धति, 1953, पटना।
7. मुखर्जी, दि राइज एंड फॉल ऑफ दि कुशाना एम्पायर, 1988, नई दिल्ली।
8. चोपड़ा, पी0एन0, पुरी, एम0एन0, ए साोशल, कल्चरल एंड इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, 1974, दिल्ली।